व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की रचनात्मक त्रैमासिकी

वर्ष : 19 अंक : 77

अक्टूबर-दिसंबर : 2023

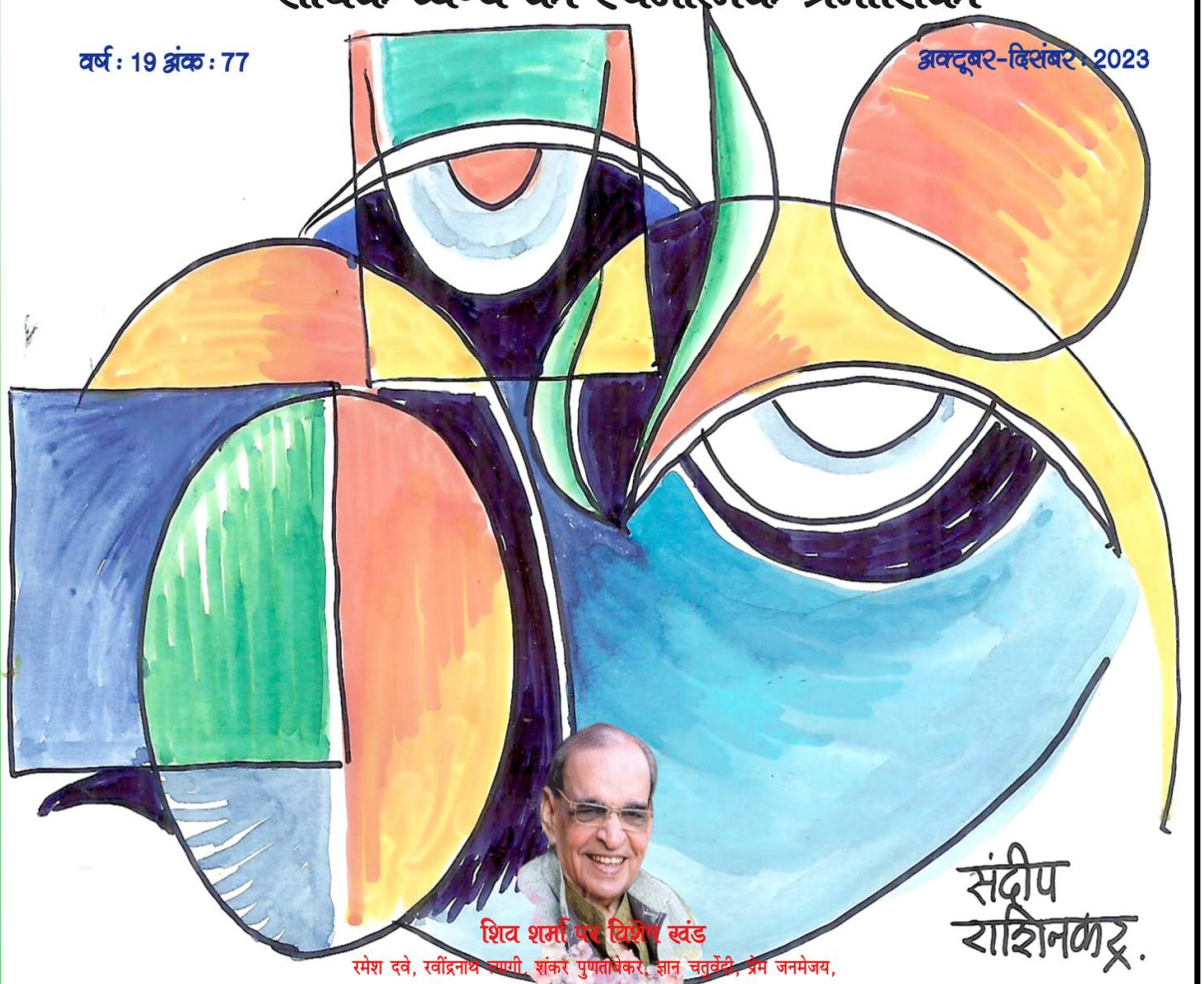

शिव शर्मा पर विशेष खंड

रमेश दवे, रवींद्रनाथ त्यागी, शंकर पुणतांबेकर, ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय,
हरीश कुमार सिंह, पिलकेंद्र अरोड़ा, अभिलाषा आदि।

इस अंक में-

श्रीलाल शुक्ल, पुष्पा भारती, अशोक वाजपेयी, विष्णु नागर, सूर्यबाला, विनोद शाही, सच्चिदानंद जोशी, रामस्वरूप दीक्षित, शिवनारायण, राजेंद्र वर्मा, सुनील देवधर दिलीप तेतरवे, महावीर अग्रवाल, हरीश कुमार सिंह, कमलेश भारतीय, धर्मपाल जैन, समीक्षा तैलंग आदि।

मूल्य ₹ 20

राजेंद्र यादव स्मृति हंस साहित्योत्सव 2023 में व्यंग्य विमर्श की सहभागिता

विभिन्न सत्रों की कुछ छवियां

अणु शक्ति सिंह के संचालन में 'परसाई की परंपरा और हिंदी की बांकी मुस्कान', चर्चा में ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय, आलोक पुराणिक और राजीव निगम

उदयराज सिंह स्मृति सम्मान और उदयोत्सव की कुछ छवियां

माधव कौशिक को 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान', अंजु रंजन (दिल्ली), दीर्घ नारायण (लखनऊ), राकेश शर्मा (इन्दौर) तथा पंकज चौधरी (दिल्ली) को 'नई धारा रचना सम्मान' से नवाजते हुए 'नई धारा' के प्रधान संपादक डॉ. प्रमथराज सिंह तथा भारतीय ज्ञानपीठ के निदेशक मधुसूदन आनन्द युवा सम्मान और 'मैडम सर' का लोकार्पण।

युवा उत्कर्ष साहित्यिक मंच का सम्मान समारोह-2023

अनूप श्रीवास्तव को 'भारतेंदु हरिश्चन्द्र शीर्षस्थ सम्मान', योगेंद्र नारायण को लाइफ टाइम अचीवमेंट सम्मान, व्यंग्य यात्रा का लोकार्पण।

हरीश अरोड़ा की दो पुस्तकें लोकार्पित, प्रेम विज साहित्य सभा द्वारा सम्मानित, प्रो. वशिष्ठ अनूप हिन्दी रत्न सम्मान से सम्मानित।

व्यंग्य यात्रा

सार्थक व्यंग्य की

रचनात्मक त्रैमासिकी

अक्टूबर-दिसंबर 2023

वर्ष-19 **अंक-77**

एक अंक : 20 रुपए

पांच अंक : सौ रुपए

डिजिटल रूप में NotNul पर उपलब्ध

neelabhsrivastav@gmail.com

सहयोग राशि 'व्यंग्य यात्रा' के नाम से ही भेजने का कष्ट करें।

संपादक

प्रेम जनमेजय

73, साक्षर अपार्टमेंट्स
ए-3 पश्चिम विहार
नई दिल्ली-110063

फोन : 011-470233944
मोबाइल : +91-9811154440

ई-मेल-
yatravyangya2004@gmail.com
premjanmejai@gmail.com

आवरण : संदीप राशिनकर की कलाकृति पर आधारित

रेखाचित्र : संदीप राशिनकर

कानूनी सलाहकार (अवैतनिक)
एडवोकेट कुलदीप आहूजा
उच्च न्यायालय

प्रबंध सहयोग
राम विलास शास्त्री
मोबाइल : +91-9911077754
+91-8920111592

'व्यंग्य यात्रा' में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। विवादास्पद मामले दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे। संपादन एवं संचालन पूर्णत: अवैतनिक और अव्यावसायिक।

अनुक्रम

आरंभ 1-3

चंदन धिर्से 4-6

पाथेय 7-10

श्रीलाल शुक्ल-
व्यंग्य की स्वीकार्यता बढ़ रही है 7

पुष्पा भारती-
धर्मवीर भारती को याद करते हुए
पुष्पा भारती से प्रेम जनमेजय का संवाद 8

चिंतन 11-28

अशोक वाजपेयी से महावीर अग्रवाल का संवाद-
स्वाभिमान और साहस के प्रतीक 11

विष्णु नागर से रणविजय राव का संवाद-
यदि आपमें साहस, हिम्मत नहीं है तो व्यंग्य न लिखें, कोई और काम कर लें 15

कर्मचारियत (विष्णुनागर की फेसबुक वॉल से) 18

दिलीप तेतरवे-
परसाई की प्रासंगिता अब पहले से अधिक 19

समीक्षा तैलंग-
....परसाई के स्तंभ की प्रासंगिकता 22

अलका अग्रवाल सिगतिया-
परसाई अक्षरश: सजग अनथक लेखक हैं 26

गद्य रचना 29-49

सूर्यबाला- ....मरते दम तक व्यंग्य 29

गंगा राम राजी- सारथी 30

गोविन्द सेन- मुबारक और शुभकामना 32

रामस्वरूप दीक्षित- भले आदमी 33

देवेन्द्र कुमार पाठक- हम जस बिरल के 'पाठक' होई 34

सच्चिदानंद जोशी- कबहु बढ़ेगी चोटी 36

श्याम सखा श्याम- नाम में क्या रखा है... 37

अखिलेश श्रीवास्तव चमन- लघु व्यंग्य 39

दिनेश गंगराड़े- एक लघुशोध, पूड़ियों पर...? 41

धर्मपाल महेंद्र जैन- लिफाफा और मजमून 42

गौरव- कागज का शेर 44

जितेंद्र पात्रो- गुरू बनारसी, चेला माखनलाल 45

हरीश कुमार सिंह- ट्वीट्स ऑफ कॉमन मेन 46

ऋषभ जैन- आसमान से टपकती अपीलें 47

सुधा कुमारी- यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते... 48

संजीव शुक्ल- राजा की तबियत का राज 49

पद्य रचना 50-56

विनोद शाही 50

शिवनारायण 51

राजेन्द्र वर्मा 51

तरसेम गुजराल 52

गिरिराजशरण अग्रवाल 53

श्रवण कुमार 'मुफलिस' 53

डॉ. सम्राट सुधा 54

कमलेश भारतीय 54

सुनील देवधर 55

हरिशंकर राढ़ी 56

शेफाली कपूर 56

बहुकोणीय : शिव शर्मा 57-66

परिचय- शिव शर्मा

प्रेम जनमेजय- व्यंग्य लेखन और आयोजन... 58

मेरी दृष्टि में शिव शर्मा की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएं-

हरीश कुमार सिंह- प्रेमालिंगन का जादू 59

लालित्य ललित- अपना ही श्राद्ध 60

रणविजय राव- एक प्रजातंत्रीय ट्रेजेडी 63

पिलकेन्द्र अरोड़ा- स्व. भोलागुरु रससिक्त साहित्य मंडल 65

दुष्यन्त कुमार- टेपा सम्मेलन के लिए गजल 66

हास्य-व्यंग्य (टेपा) राधा-लाला अमरनाथ स्मृति सम्मान सूची 66

आलोचना के निकष पर : शिव शर्मा 67-77

श्रीराम दवे- अच्छी किस्म के किस्सागो थे डॉ. शिव शर्मा 67

डॉ. रामरतन ज्वेल- टेपा संस्कृति के जनक डॉ. शिव शर्मा 68

शंकर पुणतांबेकर- ...शिव शर्मा के व्यंग्य लेखन पर 69

रवीन्द्रनाथ त्यागी- मर्म को छू लेने और छेदने वाले व्यंग्य 71

अरुण वर्मा- विरोधाभासों का विरल संयोजन... 72

अभिलाषा- डॉ. शिव शर्मा के सम्पादित ग्रन्थ... 74

स्मृतियों में शिव शर्मा 78-88

कैलाश मंडलेकर- डॉ. शिव शर्मा को याद करते हुए!! 78

ज्ञान चतुर्वेदी- ...लिफाफे की शिकायत करूंगा? 80

राजशेखर व्यास- शिव शर्मा की सबसे बड़ी देन... 81

सुमेध सिंह शर्मा- हमारे बाबा- डॉ. शिव शर्मा 82

हरीश कुमार सिंह- शिव जी का न कोई जोड़ है न तोड़ 83

कन्हैयालाल नंदन- जहाँ खुले मन हयात बँटती है... 84

पिलकेन्द्र अरोरा- कैसे लिखूं अलविदा सर...! 85

डॉ. विवेक चौरसिया- टेपाधिराज का अंतिम ठहाका! 87

रमेशचंद्र शर्मा- शिवसेना का मैं सैद्धांतिक सिपाही 88

संजय जोशी सजग- मेरी याद और टेपा गुरू शिव शर्मा 88

परिक्रमा 89-90

राहुल देव- व्यंग्य परिक्रमा 2023 89

इधर जो मैंने पढ़ा- 91-98

कैलाश कंडलेकर- काल के कपाल पर हस्ताक्षर पर 91

गिरीश पंकज- आनंदी बुआ की बातें पर 94

यशवंत कोठारी- बहेलिया पर 95

अशोक मिश्र- कैनवास के बाहर झांकती लड़की पर 96

प्रेम जनमेजय- बॉस डांस पर 98

समाचार 99-104

अब आप

आर.टी.जी.एस.

द्वारा 'व्यंग्य यात्रा' को अपना आर्थिक सहयोग दे सकते हैं।

खाताधारक का नाम : व्यंग्य यात्रा
बैंक का नाम : केनेरा बैंक
शाखा- पश्चिम विहार, ए-ब्लाक
खाता संख्या : 3223201000092
IFSC Code : CNRB0003223

आरंभ

परसाई जन्मशति समारोह की ज्वाला निरंतर प्रज्जवलित हैं। जब परसाई की रचनाओं में ठंडापन नहीं था तो उनके जन्मशति वर्ष में ठंडापन क्यों आये। लगता है कि वर्ष भर 'व्यंग्य यात्रा' के प्रत्येक अंक में कुछ पन्ने तो परसाई साहित्य पर चिंतन के लिए मिलते रहेंगे। पिछले अंक में 'परसाई की प्रासंगिकता' को लेकर चिंतन था। यह चिंतन इस अंक का भी हिस्सा बन रहा है। हिंदी व्यंग्य में दो प्रश्न निरंतर बने हुए हैं- विधा का प्रश्न और हास्य का व्यंग्य से रिश्ता। महावीर अग्रवाल ने अशोक वाजपेयी से लिया गया साक्षात्कार भेजा तो परसाई विमर्श के साथ विधा प्रश्न को एक और कोण मिला। अशोक वाजपेयी परसाई की देन को रेखांकित करते हुए कहते हैं, 'परसाई की एक और विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने साहित्य के लिए एक बहुत व्यापक पाठक वर्ग तैयार किया था। उसमें अभिजात से लेकर निपट गरीब तबकों के लोग शामिल थे। हिन्दी में व्यंग्य को लगभग एक स्वतन्त्र विधा के रूप में स्थापित करने में वे अग्रणी थे। यह आकस्मिक नहीं है कि आज भी व्यंग्य और उसका नाम पर्यायवाची माने जाते हैं।' जब अशोक वाजपेयी कहते हैं, 'हिन्दी में व्यंग्य को लगभग एक स्वतन्त्र विधा के रूप में स्थापित करने में वे (परसाई) अग्रणी थे', तो विधा समर्थकों को बड़ा बल मिलता है। यह साक्षात्कार इस अंक का हिस्सा बन रहा है। निश्चित ही परसाई ने एक बड़ा पाठक वर्ग तैयार किया और उनकी इसी ताकत का परिणाम है कि उन्हें और उनके योगदान को निरंतर रेखांकित किया जा रहा है। इस बहाने व्यंग्य को लेकर गंभीर चर्चा का दौर भी बना हुआ है। इसी अंक में विष्णु नागर का रणविजय राव के साथ एक संवाद है। विष्णु नागर साक्षात्कार में व्यंग्य की शक्ति को रेखांकित तो करते ही हैं हास्य और व्यंग्य के रिश्तो को लेकर अपने कोण को भी स्पष्ट करते हैं। वे कहते है, 'मैं समझता हूँ कि व्यंग्य की एक वासियत यह है कि जो भी समय चल रहा है, चाहे वह नेहरू जी का समय हो, इंदिरा गांधी जी का समय रहा हो या किसी का समय रहा हो या वर्तमान समय ही क्यों न हो, उस समय जो कहा जा रहा है, बोला जा रहा है, उस समय की जो विसंगतियां हैं उनको धारदार ढंग से कहने का एक तरीका है।...व्यंग्य लेखन में साहस और निर्भीकता बहुत जरूरी है और दूसरी बात कि राजनीतिक समझ बहुत जरूरी है। यदि आपको राजनीतिक समझ नहीं है और आप राजनीति में जो घटित हो रहा है, उसके बारे में आपमें बोलने का साहस नहीं है तो आपको व्यंग्य नहीं लिखना चाहिए। आप में बेबाक और बेलाग होकर कहने का साहस नहीं है तो आप व्यंग्य नहीं लिख सकते। व्यंग्य कोरा हास्य नहीं है। कोरा क्या बल्कि यह जरूरी नहीं है कि उसमें हास्य हो ही। हास्य होने से आपका कहने का जो तात्पर्य है वह और हल्का हो जाता है। तो बुनियादी रूप से आज के राजनीतिक समय, आज के सांस्कृतिक समय में जो विसंगतियां मौजूद हैं, उनको प्रकट करने का एक सबसे सशक्त माध्यम है व्यंग्य।' चिंतन में परसाई की प्रासंगिकता को अपनी-अपनी निगाह से देखने वाले दिलीप तैतरवे और समीक्षा ठाकुर के आलेख भी जा रहे हैं।

आजकल समृद्ध साहित्य उत्सवों और पुस्तक मेलों को देखकर लगता है कि भारत की अर्थव्यवस्था ही नहीं साहित्य की अर्थव्यवस्था भी सुदृढ़ है। जैसे समाज में उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग की श्रेणियां हैं वैसे ही इन उत्सवों के आयोजनों की भी हैं। समृद्ध साहित्य उत्सव में साहित्य प्रमुख नहीं होता, बहुत कुछ और भी प्रमुख होता है। ऐसे मेले साहित्य के साथ-साथ साहित्यकारों को तो 'समृद्ध' करते ही हैं, स्वयं भी समृद्ध होते हैं। गरीबों पर लिखने वाले लेखक हवाई यात्रा की सहूलियत पा रहे हैं और पांच सितारा होटल की आवभगत। आयोजन करने वाले और उसका हिस्सा बनने वाले- दोनों लाभ कमाते हैं। मत है कि इसमे कोई बुराई नहीं। गरीबी को पद्मश्री का मैडल बनाकर न टांगा जाए तो बेहतर। अमीरी का कुछ हिस्सा, साहित्य संस्कृति के खाते में आ जाये तो क्या बुराई है। मेरा मानना है कि यह बुराई तब तक नहीं जबतक ये आपकी सामाजिक सरोकारों की सोच, प्रतिबद्धता आदि को मोहपाश में नहीं बांधती। ऐसे मेलों साहित्य कितना समृद्ध हो रहा है! ऐसे प्रश्न बेकार के होते हैं, इनपर क्या माथा-पच्ची करनी। ऐसे मेलों में परसाई जैसे वंचित समर्थक रचनाधर्मियों की ओर अक्सर पीठ ही होती है। चकाचौंधी मेले देखकर अनेक साहित्यकार हीन भावना का शिकार होते हैं।

मध्यमवर्गीय मेलों में साहित्य प्रमुख होता है। इनकी पूरी टीम होती जिनके कंधे कुछ-कुछ सुदृढ़ होते हैं। भार बराबर बंटता है। हां आयोजकों को आप आयोजन व्यवस्था की चिंता में इधर से उधर विचरण करते देख सकते हैं। यहां परसाई जैसे अनेक रचनाकार उत्सव की मुख्यधारा में होते हैं। (ऐसे ही एक साहित्योत्सव का समाचार इस अंक में जा रहा है।)

बेटी का विवाह सभी करते हैं। बड़े-बड़े लोग अपने काले धन का सदुपयोग कर 'डेस्टिनेशन' मैरिज करते हैं। बेचारा बेटी का बाप कभी न चुका सकने वाला ऋण लेकर बेटी के हाथ पीले करता है। गुणीजन मेलों का आयोजन लाभ कमाने के लिए करते हैं पर कुछ अवगुणी हैं जो सामाजिक सरोकारों के चलते घाटे का सौदा करते हैं। आगरा के दीपक सरीन ऐसे ही अवगुणी हैं। दीपक सरीन ने बड़े उत्साह से 'राष्ट्रीय पुस्तक मेला आगरा 2023' की सोच निर्मित की थी। उसने इस विश्वास के साथ अपनी

छोटी-सी झोली फैलाई कि उसे भरपूर आर्थिक सहयोग मिलेगा, पर झोली आधी भी न भरी।

समस्या वहां आती है जब आप अमीरी आयोजनों की सुविधाओं के सुखीजन बन भिक्षुकों को सूखी घास तक नहीं डालते। भिक्षुक को न केवल उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं अपितु दुत्कारते भी है। 'व्यंग्य यात्रा' स्वयं एक भिक्षुक पत्रिका है इसलिए वह वंचित का दर्द समझती और उसके दर्द की सहयात्री बनती है। इसी सोच के साथ 'व्यंग्य यात्रा' ने अपने शुभचिंतकों संग इस पुस्तक मेले में एक दिन व्यंग्य दिवस, सहयोग के आधार पर आयोजित करने का मन बनाया। उन सबसे सम्पर्क किया जिन्हें कोई अपेक्षा नहीं थी। यही नहीं व्यंग्य किशोर और युवा पीढ़ी तक पहुंचे इसके लिए 'व्यंग्य का ककहरा' नाम से सत्र रखा जिसमें दसवीं ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों की उपस्थिति रही। यह आयोजन सार्थक व्यंग्य के शुभचिंतकों के कारण ही सम्भव हुआ। (इसका पुस्तक मेले का भी संक्षिप्त समचार इस अंक में जा रहा है।)

पं. शिव शर्मा पर बहुकोणीय

'व्यंग्य यात्रा' में पंडित शिव शर्मा पर विशेष समाग्री देने का एक मकसद है। जैसे दो धरातल शिव शर्मा के लेखन में दिखाई देते हैं, वैसे ही उनके टेपा सम्मेलन के आयोजक के रूप में भी हैं। 'कबीरा आप ठगाइये' अन्दाज में,समाज में भोले विचार के समर्थकों के साथ खड़े होने और गंभीरता से उसे कबीरी सोच के साथ टेपा बनाने की प्रक्रिया आंरभ हुई और सूर्यनारायण व्यास, डॉ. धर्मवीर भारती, विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, हरिशंकर परसाई, शिवमंगलसिंह सुमन, दुष्यंत कुमार, कमलेश्वर, शरद जोशी आदि इसका हिस्सा बने और उन्हें 'टेपा सम्मान' को सम्मानित गया। पर गाड़ी लोकप्रियता के अंधपाश में फंस धीरे-धीरे पटरी से उतरती है और इस मंच पर अवतरित होते हैं असरानी, टिक्कू तलसानियां, प्रेम चौपडा, शक्ति कपूर, अर्चना पूरन सिंह, भारती सिंह आदि और गाड़ी इस दिशा में बढ़ जाती है। 'टेपा सम्मेलन' के इस बदलाव पर रवीन्द्रनाथ त्यागी की यह टिप्पणी बहुत कुछ कहती है- 'टेपा सम्मेलन बंद नहीं होगा। राजेन्द्रनाथ से तो मैं ही अच्छा रहूँगा। सिर्फ साहित्यकारों के लतीफे सुनाउँगा।'

शिव शर्मा पर बहुकोणीय केंद्रित करने की सोच के पीछे का कारण बनी थी उज्जैन की कालिदास अकादमी में, 8-9 फरवरी 2020 कों 'शब्द प्रवाह' और 'व्यंग्य यात्रा' के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी। इस महोत्सव में बड़ी संख्या में स्थानीय व्यंग्यकारों सहित देश के करीब 16 राज्यों के लेखकों-व्यंग्यकारों की भागीदारी रही। पिछले कुछ बरसों में मैं अनेक बार उज्जैन गया और जब भी गया हरीश कुमार सिंह, शैलेंद्र कुमार शर्मा और पिलकेंद्र अरोड़ा से बात करते हुए शिव शर्मा और उनके 'टेपा सम्मेलन' पर चर्चा हो जाती। 'टेपा सम्मेलन' का नाम और चर्चा सुनते ही न जाने क्यों अगंभीर चर्चा का सहभागी होने का मुझे डर सताने लगता। फरवरी 2020 में मैंने हरीश कुमार सिंह, शैलेंद्र कुमार शर्मा और पिलकेंद्र अरोड़ा से विस्तृत चर्चा की और मुझे समझ आया कि शिव शर्मा लेखक और आयोजक के दो पक्ष हैं। एक बात और समझ आई कि सीमित साधनों में एक गंभीर सोच के साथ आंरभ किए साहित्यिक आयोजन कैसे लोकप्रियता की बली चढ़ न केवल अपनी जड़ों से कट जाते हैं अपितु मकसद ही खो देते हैं। ऐसी एक लखनवी संस्था के उद्भव और विकास से मैं परिचित हूं जिसका श्रीगणेश एक गंभीर मकसद के साथ हुआ और कालांतर में लोकप्रियता के ऐसे मोहपाश में बांधा कि गाड़ी एक बार पटरी से उतरी तो आज भी पटरी विहीन जिधर सींग समाएं चल रही है।

व्यक्ति/ संस्थाओं के साथ घटने वाली ऐसी घटनाओं/ दुर्घटनाओं के विश्लेषण के मन ने कहा कि शिव शर्मा पर एक विशेषांक निकाला जाए। मत चूके चौहान की शैली में मैंने फरवरी 2020 के आयोजन में मंच से घोषणा कर दी कि जल्द 'व्यंग्य यात्रा' का अंक शिव शर्मा पर केंद्रित होगा। इसके बाद कोरोना काल ने चौहान को चूकने को विवश किया और विशेषांक टल गया, पर मेरे मन के किसी कोने में रहा और इसकी रूपरेखा बनाता रहा। अंतत: मैंने अप्रैल-जून 2023 अंक में घोषणा की और हरीश कुमार सिंह, डॉ. शैलेंद्र शर्मा और पिलकेंद्र अरोड़ा से कमर कसने को कहा। तीनों ने कमर तो कसी पर कसान कुछ ढीली रह गई और इसका परिणाम यह हुआ कि सामग्री अपेक्षानुसार नहीं मिली, विशेषांक के स्थान पर बहुकोणीय से संतोष करना पड़ा। ऊंट के मुंह में जीरा इतना तो भरा ही कि भूख को कुछ राहत मिले। इसके लिए हरीश कुमार सिंह, डॉ. शैलेंद्र शर्मा और पिलकेंद्र अरोड़ा का आभार।

संदीप राशिनकर पर बहुत कुछ कहना है-

कला में अपने नवाचारों के लिए जाने जाने वाले संदीप राशिनकर न केवल 'व्यंग्य यात्रा' के शुभचिंतक हैं अपितु उसका हिस्सा भी है। उनके कलाकर्म को निरंतर रेखांकित किया जाता रहा है। बहुत मन है कि ऊंचाईयों की ओर निरंतर अग्रसर उनकी कूची पर कुछ कह सकूं। बहुत कुछ कहने की न तो मुझ अल्पज्ञ में क्षमता है और न ही ज्ञान। कुछ समय पहले उन्हें 'सप्तपर्णी' सम्मान से सम्मानित किया गया था। पेशे से सिविल इंजीनियर पर कला की इंजीनियरिंग में पारंगत की देश-विदेश में अनेक प्रदर्शनियां लग चुकी है। ऐसे रचनाकार पर मैं यदि कुछ कहूं तो छोटे मुंह बड़ी इतनी बात होगी कि मेरी जगहंसाई ही होगी। अत: सोच है कि आगामी अंक में किसी कला मर्मज्ञ से उनके संबंध में एक आलेख प्रस्तुत करूं और उसके साथ अपने कलम की कला नादानियां भी।

'व्यंग्य यात्रा' परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि

आदरणीय रामदरश मिश्र न केवल मेरे और व्यंग्य यात्रा के शुभचिंतक हैं अपितु इसे सही दिशा देने के परामर्शदाता भी। वे मेरे साहित्यिक परिवार में मेरे अभिभावक भी हैं। भाई विज्ञान व्रत मेरे सहयात्री हैं एवं 'व्यंग्य यात्रा' को निरंतर अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान करते रहते है। रामदरश मिश्र जी और भाई विज्ञान व्रत को पिछले दिनों पत्नी शोक हुआ है। 'व्यंग्य यात्रा' परिवार की ओर से श्रद्धेय सरस्वती मिश्र जी और श्रीमती अशोक को विनम्र श्रद्धांजलि।